Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

प्रौद्योगिकी और मानवीय मूल्य: हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में एक विमर्श

डॉ. राखी के शाह
सहायक प्राध्यापिका, जैन (मानद विश्वविद्यालय),
एस.ओ.एस, जे सी रोड, बेंगगलूरु।
Email: rahkishah1976@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180318
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 96-98
March- 2026
Submitted: 25 Feb. 2026
Revised: 05Mar. 2026
Accepted: 15 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश

ब्राह्मी-स्वरूपा, जन्मदात्री, ज्ञान-गौरव-शालिनी, प्रत्यक्ष लक्ष्मीरूपिणी, धन-धान्य-पूर्णा,पालिनी ।
दुर्द्धर्ष रुद्राणी स्वरूपा शत्रु -सृष्टि-लयङ्करी, वह भूमि भारतवर्ष की है भूरि भावों से भरी ॥
मैथिलीशरण गुप्त,भारत-भारती ।

ऐसे महान भारत की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति मानी गई है। भारत भूमि की सांस्कृतिक समृद्धि तथा शाश्वस मूल्यों विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। आधुनिक युग प्रौद्योगिकी का युग है। विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं, किंतु इसके साथ-साथ मानवीय मूल्यों के क्षरण की समस्या भी उत्पन्नकी हैं। यंत्रीकरण, औद्योगिकीकरण और डिजिटल संस्कृति ने मनुष्य के जीवन-ढाँचे, संबंधों और संवेदनाओं को गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी साहित्य के माध्यम से यह विश्लेषण करना है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी ने मानवीय सरोकारों को किस प्रकार प्रभावित किया है तथा साहित्य ने इन परिवर्तनों के प्रति कैसी मूल्यपरक दृष्टि अपनाई है। प्रेमचंद से लेकर समकालीन रचनाकारों तक, हिंदी साहित्य तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन की आवश्यकता पर निरंतर बल दिया है।

मूल शब्द : प्रौद्योगिकी, मानवीय मूल्य, हिंदी साहित्य, आधुनिकता, नैतिकता

भूमिका

मानव सभ्यता के विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। कृषि उपकरणों से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक की यात्रा ने मानव जीवन को सहज और गतिशील बनाया है। किंतु जब प्रौद्योगिकी साधन न रहकर साध्य बन जाती है, तब मानवीय मूल्यों—करुणा, संवेदना, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व—पर संकट उत्पन्न हो जाता है। मानवीय मूल्यों पर हमारी संस्कृति निरभर थी, उनकी नींव क्यों? किस प्रकार? और कौन-कौन से कारणों से हिलने लगी है? इनका सूक्ष्म अंकन हिन्दी साहित्यकारों ने किया। भारत में औद्योगिक और भौतिक विकास के प्रभाव से मानवीय संबंधों के मूल में भी जटिलताएं उत्पन हो गयीं। नगरों और महानगरों में बढते हुए ऑद्योगिक विकास, जीवन की भागदौड, बढ़ती हुई जनसंख्या, महंगाई एवं मूल्य विघटित राजनीति ने पारिवारिक विघटन को जन्म दिया। परम्परागत संयुक्त परिवार टूट कर एकल परिवार हुए। संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियो के सदस्य एक दुसरे के साथ बंधे रहते थे परन्तु जब सम्बन्धों की प्रगाढ़ता टूटने लगी तो सौहार्द, बंधुत्व, त्याग, समर्पण, सेवा आदि मूल्य टूटने लगे इस प्रक्रिया के कारण पारिवारिक सम्बन्ध दरकने लगे जिसका अंकन विविध साहित्यकारों ने किया हैं।

हिंदी साहित्य और आधुनिक चेतना

आधुनिक हिंदी साहित्य में औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ राखी के शाह, सहायक प्राध्यापिका,जैन (मानद विश्वविद्यालय), एस.ओ.एस, जे सी रोड, बेंगगलूरु।

How to cite this article:
शाह, . राखी . के. (2026). प्रौद्योगिकी और मानवीय मूल्य: हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में एक विमर्श. Journal of research & development, 18(3(A)), 96–98. https://doi.org/10.5281/zenodo.20537720

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20537720
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

साहित्यकारों ने तकनीक को न तो पूर्णतः नकारा है और न ही उसका अंधानुकरण किया है। उन्होंने तकनीक के सामाजिक और नैतिक प्रभावों को मानवीय दृष्टि से परखा है। हिंदी साहित्य, इस संकट को केवल दर्ज ही नहीं करता, बल्कि उसके कारणों और संभावित समाधानों पर भी विचार करता है।

प्रौद्योगिकी और मानवीय मूल्यों की अवधारणा

प्रौद्योगिकी मूलतः मानव आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है, जबकि मानवीय मूल्य मानव व्यवहार को नैतिक दिशा प्रदान करते हैं। जब तकनीकी प्रगति मानवीय विवेक से संचालित होती है, तब वह समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होती है; परंतु विवेकहीन तकनीक विनाश का कारण भी बन सकती है। हिंदी साहित्य इसी द्वंद्व को रेखांकित करता है।

प्रेमचंद और सामाजिक-मानवीय मूल्य

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे युगद्रष्टा लेखक हैं जिन्होंने औद्योगिक और आर्थिक संरचनाओं के मानवीय प्रभावों को गहराई से चित्रित किया। *गोदान* में किसान जीवन पर पूँजीवादी और अर्ध-औद्योगिक व्यवस्था के दुष्परिणाम स्पष्ट हैं। तकनीकी और आर्थिक प्रगति के नाम पर मनुष्य के शोषण को प्रेमचंद ने अमानवीय ठहराया है।

आर्थिक दशा की समीक्षा करते हुए अर्चना जैन ने भी 'प्रेमचंद के निबन्ध साहित्य में सामाजिक चेतना' नामक अपने लघु शोध प्रबन्ध में कहा है- "धन के लोभ में मानव-भावों को पूर्ण रूप से अपने आधीन कर लिया है। कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी पैसा और पैसा केवल है। जिसके पास पैसा है वह देवता-स्वरूप है, उसका अंतःकरण कितना ही कालिख क्यों न हो।"

विमाता की समस्या- विमाता (सौतेली माँ) बनकर जीवन-व्यतीत करना भी नारी के लिए समस्या ही मोल लेना है। सौतेली माँ अपने सौतेले पुत्रों के साथ कितना भी अच्छा बर्ताव क्यों न करे, समाज उस पर कुछ न कुछ लाँछन लगाये बगैर नहीं रहता। इस संदर्भ में निर्मला अपने मुंह से अपने बेटों से इस प्रकार करती है- "तुम्हारा कुसूर नहीं। विमाता का नाम ही बुरा होता है। अपनी माँ विष भी खिलाए तो अमृत है, मैं अमृत भी खिलाऊँ तो विष हो जाएगा।" अपने कोख से जन्में पुत्र-पुत्रियों से भी सौत के संतान से अच्छा बर्ताव करने पर भी सौतेली मां को समाज तथा घर के सदस्य दोषी ठहराने में आगे-पीछे नहीं सोचते।

अनमेल विवाह की समस्या

सुमन के मामा उसकी शादी गजाधर प्रसाद जो दुहाजू और उम्र में उससे काफी बड़े थे, उनके साथ करा देते हैं। विवाह के पश्चात, "गंगाजली दामाद को देखकर बहुत रोई ऐसा दुख हुआ मानो किसी ने सुमन को कुएं में डाल दिया हो।" दहेज के लिए रकम न होने के कारण सुमन का विवाह निर्धन गजाधर से होता है।

जयशंकर प्रसाद और मानवीय मूल्य

जयशंकर प्रसाद के कामायनी काव्य मे मानवीय मूल्य 'कर्म' सर्ग में is प्रकार दीख पड़ते है-

अपने में सब कुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा?
यह एकांत स्वार्थ भीषण है अपना नाश करेगा।
औरों को हँसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ।

प्रसाद का पक्ष है कि देव-सृष्टि जहां भोग-विलास और महज् भौतिक सुख-साधनों में डूबी हुई थी वहाँ मनुष्य की सृष्टि कुछ नये मान-मूल्यों का आविष्कार करती है।

निराला की देश के स्वर्णिम पुनर्निर्माण की आशा

नये समाज की संरचना हेतु वे जीवन के उस सत्य का वरण करना चाहते हैं जिसमें निहित विश्व स्नेह को भावधारा में बद्ध हो सके और मानव संस्कृति का आस्वादन कर सके इसके लिए उन्होंने मानव को निम्नलिखित आदेश दिया है-

'बुराई छोड किसी की भलाई कर या न कर,
जमी रहने दे, जग रहने दे, जान रहने दे।

निराला जी की राष्ट्रीय आकांशा तथा बलवती आशा देश के स्वर्णिम पुनर्निर्माण के हेतु अग्रसर है।

अज्ञेय और आधुनिक बोध

अज्ञेय आधुनिक हिंदी साहित्य में वैज्ञानिक चेतना और व्यक्ति-स्वातंत्र्य के प्रमुख प्रवक्ता हैं। *शेखर: एक जीवनी* में तकनीकी-आधुनिक समाज के बीच व्यक्ति की अस्मिता और आत्मसंघर्ष को उभारा गया है। यहाँ तकनीक जीवन को गति तो देती है, पर अर्थ का संकट भी उत्पन्न करती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

धर्मवीर भारती: तकनीक और नैतिक संकट

धर्मवीर भारती का *अंधा युग* तकनीकी शक्ति और नैतिक पतन का प्रतीकात्मक चित्रण है। युद्ध की तकनीकें मानवता को किस प्रकार अंधकार की ओर ले जाती हैं—यह प्रश्न कृति के केंद्र में है। भारती तकनीकी सामर्थ्य पर नैतिक नियंत्रण की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

निर्मल वर्मा और आधुनिक अकेलापन

निर्मल वर्मा की कहानियों में आधुनिक तकनीकी सभ्यता से उत्पन्न अकेलापन और भावनात्मक दूरी प्रमुख है। तकनीक संबंधों को जोड़ने का दावा करती है, किंतु मानवीय निकटता को कम भी करती है।

हरिशंकर परसाई - व्यंग्य साहित्य में तकनीकी विडंबना

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य आधुनिक समाज की यंत्रीकृत सोच और तकनीकी दंभ पर तीखा प्रहार करते हैं। उनका साहित्य चेतावनी देता है कि संवेदना-विहीन तकनीक समाज को अमानवीय बना देती है।

समकालीन हिंदी साहित्य और डिजिटल युग

डिजिटल मीडिया, सोशल नेटवर्क और आभासी पहचान ने मानवीय संबंधों की प्रकृति बदल दी है। समकालीन हिंदी साहित्य निजता-संकट, सूचना-अधिभार और नैतिक भ्रम की समस्याओं को रेखांकित करता है। यहाँ साहित्य तकनीक के मानवीयकरण की आवश्यकता पर बल देता है।

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य आधुनिक प्रौद्योगिकी को मानवीय मूल्यों की कसौटी पर परखता है। प्रेमचंद की सामाजिक करुणा, छायावाद की संवेदना, अज्ञेय का आधुनिक विवेक, भारती की नैतिक चेतावनी, निर्मल वर्मा का अस्तित्वबोध और परसाई का व्यंग्य—सभी मिलकर यह सिद्ध करते हैं कि तकनीक तभी सार्थक है जब वह मानवता की सेवा करे। साहित्य तकनीकी प्रगति और मानवीय सरोकारों के बीच संतुलन का मार्ग प्रशस्त करता है। अगर देश के युवाओं को भारत की संस्कृति, सभ्यता और भारत का ज्ञान देना आरंभ करेंगे तो हमें बड़े दूरगामी परिणाम हासिल होंगे क्यों कि हमारे जड़ ही हमें पंख देंगे। हिंदी साहित्य की शिक्षा, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई को ध्यान में रखते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम' के सपने को साकार कर ने में अपना योगदान देती है। इस संदर्भ में श्री रामनाथ गुप्त की कविता की पंक्तियाँ स्मरणीय हैं-

नये पंथ पर दृढ पग होंगे, नये लक्ष्य पर दृढ पग होंगे,
नये लक्ष्य पर दृढमन होंगे, नई उमंग से, नई साधना-रत जन होंगे।
नये विश्वास की निर्मिती के हित न्यौछावर होगी।
तरुणाई महिमामय इस भव्यभूमि पर उत्सर्गों की बेला आई।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. मुंशी प्रेमचंद, 2012, सेवा सदन, जनवाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 19
2. मुंशी प्रेमचंद, 2005, *गोदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,* पृ. 112
3. मुंशी प्रेमचंद, 2012, निर्मला, जनवाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 126
4. अज्ञेय, 2011, शेखर एक जीवनी, *राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,* पृ. 214
5. धर्मवीर भारती, 2009, अंधा युग, *राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,* पृ. 89
6. निर्मल वर्मा, 2012, प्रतिनिधि कहानियाँ, *राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,* पृ.132
7. हरिशंकर परसाई, 2014, विकलांग श्रद्धा का दौर *राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,* पृ.132
8. डॉ. अर्चना जैन, 1979, प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना. -. पृ. 56 .
9. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, 1966, परिमल, लोकभारती प्रकाशन,-पृ – 45
10. जयशंकर प्रसाद, 1936, कामायनी, इलहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, पृ-203